अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

भविष्य निर्माता प्रशिक्षण सत्र

विचार क्रांति अभियान

प्रारूप पुस्तिका

विचार क्रांति अभियान

कार्यालय, युवा जागृति अभियान एवं सप्त आंदोलन

- **पत्राचार का पताः**क ार्यालय,य ुवाज ागृतिअ भियानए वंस प्त आंदोलन,शांतिकुंज हरिद्वार 249411
- **कार्यालय नं.:** 01334-260602(एक्स. 436), फैक्सः-01334-260866, 9258360652 (समय प्रातः 8 बजे से सायं 6 बजे तक)
- **मोबाइल नं.:** 9258360928, 9258360785, 9258360962
- **व्हाट्स एप नं.:** ~~9258360785, 9634284140~~
- **वेबसाइटः** www.awgp.org, www.diya.net.in
- **ईमेल :** youthcell@awgp.org
- **फेसबुक पेजः** www.facebook.com/AWGPYP.DIYA, www.facebook.com/Nirmalgangajanabhiyan/
- **मोबाइल एप्पः** AWGP Yug Nirman
- **टीपः** उक्त पते पर पत्र अथवा ईमेल द्वारा आपके क्षेत्र में संपन्न कार्यक्रमों की सूचना फोटो सहित भेजने की कृपा करें। साथ ही किन्हीं असाधारण, प्रेरणादायक प्रयासों को सफलता की कहानी के लिये अवश्य प्रेषित करें।

युवा क्रांति वर्ष 2016

सृजनशील युवाओं की खोज, प्रशिक्षण, संगठन एवं राष्ट्र के नवनिर्माण में सुनियोजन का वर्ष

सूत्र वाक्यः- हम बदलेंगे युग बदलेगा - आत्म निर्माण से राष्ट्र निर्माण

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

वृक्ष गंगा अभियान

श्रीराम स्मृति उपवन/ वन / वाटिका

पंजीयन पत्रक

श्रीराम स्मृति उपवन/ वन/ वाटिका का पूरा पता-.....

.....

.....

कुल क्षेत्र फल-..... वर्गफुट/ एकड़

रोपित पौधों/ वाटिकाओं का विवरण-.....

.....

.....

अन्य प्रकल्पों की जानकारी -

ध्यान केन्द्र- .....

एक्यूप्रेशर पथ- .....

प्राकृतिक आहार केन्द्र- .....

पक्षी विहार- .....

परामर्श केन्द्र- .....

अन्य- .....

.....

संचालक मण्डल का नाम -.....

प्रभारी /कार्यवाहक का नाम, पता, फोन, ईमेल - .....

.....

.....

हमारे द्वारा उपरोक्तानुसार श्रीराम स्मृति उपवन/वन/वाटिका की स्थापना की गई है।कृपया पंजीयन करने का कष्ट करें।

आवेदक के हस्ताक्षर

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

वृक्ष गंगा अभियान
तरू पुत्र/तरू मित्र योजना

संकल्प पत्र

मैं, अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुंज हरिद्वार द्वारा संचालित वृक्ष गंगा अभियान के अन्तर्गत निम्नलिखित संकल्प करता/करती हूँ-

1. ..... पौधों (पौधे का नाम) संख्या .....को तरू मित्र या तरू पुत्र के रूप में स्वीकार कर उनका रोपण और पालन करूँगा / करूंगी।
2. .....स्मृति उपवन/वन की स्थापना करूँगा/करूंगी ।
3. अपने जन्मदिन/विवाह दिन/पितरों की स्मृति में अथवा ..... संस्कार की स्मृति में वृक्षारोपण संकल्प लेता/लेती हूँ।
4. वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत अन्य परिजनों को प्रेरित कर वृक्षारोपण एवं पालन का अभियान चलाऊँगा/चलाऊंगी।
5. गमलों में स्वास्थ्य योजनांतर्गत औषधीय पौधों का रोपण अपने घर में करूंगा/करूंगी।
6. अपने क्षेत्र के ..... ग्रामों में पंचवटी/त्रिवेणी/हरिशंकरी/माता की बाड़ी अथवा ग्राम देवता वन स्थापित करूंगा/करूंगी।

दिनांक - ..... हस्ताक्षर संकल्पकर्ता

नाम.....

पता.....

मो./फोन नं.....पिन नं- .....

ई-मेल - .....

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

युग ऋषि की ग्राम तीर्थ योजना
आदर्श ग्राम (गाँव की गोद में)

पंजीयन पत्रक

आदर्श ग्राम का नाम -.....

पो.-.....तह-.....जिला-.....

प्रांत-.....पिन नं.....कुल जनसंख्या-.....

प्रज्ञा/ युवा/ महिला मण्डल- है / नहीं है

आदर्श ग्राम विकास समिति- है / नहीं है

यदि हैं तो कार्यवाहक/प्रमुख/संचालक का नाम-श्री/श्रीमती-.....

.....आत्मज/पति -.....

फोन-..... ईमेल-.....

आदर्श ग्राम के सूत्रों पर अब तक की प्रगति का विवरण-

संस्कार -.....

व्यसन मुक्ति, कुरीति उन्मूलन-.....

स्वच्छता-.....

स्वास्थ्य-.....

शिक्षा-.....

स्वावलंबन-.....

सहयोग सहकार -.....

उपरोक्तानुसार हम सब ग्रामवासियों ने मिलकर अपने ग्राम स्वाह्य युग ऋषि की ग्राम तीर्थ योजनान्तर्गत आदर्श ग्राम बनाया है।कृपया पंजीयन करने का कष्ट करें।

आवेदक के हस्ताक्षर

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

श्रीराम आरण्यक
ग्राम विकास केन्द्र

प्रस्तावित आठ प्रकल्प –

1. कामधेनु सेवा संरक्षण शोध संस्थान

- •स्वदेशी गौ नस्ल सुधार
- •चारा विकास
- •जैविक उर्वरक (नाडेप + वर्मी)
- •बायोगैस संयंत्र

2. युग निर्माण विद्यालय

- •गौ उत्पाद आधारित प्रशिक्षण एवं प्रयोग
- •वनौषधि उत्पाद प्रशिक्षण एवं प्रयोग
- •दैनिक उपयोग सामग्री प्रशिक्षण एवं प्रयोग
- •कृषि एवं पशुपालन प्रशिक्षण एवं प्रयोग
- •आदर्श ग्राम प्रशिक्षण एवं प्रयोग
- •वनवासी स्वावलंबी पुरोहित प्रशिक्षण एवं प्रयोग

3. ग्रामोद्योग केन्द्र

- •गौ आधारित उत्पाद–कृषि हेतु–मनुष्यों हेतु
- •वनौषधि एवं खाद्य प्रसंस्करण
- •दैनिक उपयोग सामग्री
- •सिलाई बुनाई
- •काष्ठ, बांस के उत्पाद

4. **आदर्श ग्राम तीर्थ विकास केन्द्र** (सप्त सूत्र – संस्कार, व्यसन मुक्ति–

कुरीति उन्मूलन, स्वच्छता, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, शिक्षा, सहयोग सहकार)

5. **माता भगवती वनवासी वात्सल्य केन्द्र**

- वनवासी छात्रावास
- बाल संस्कार केन्द्र

6. वनौषधि चिकित्सा / वनवासी आरोग्य धाम

- प्राकृतिक
- वनौषधि
- पंचगव्य
- योगोपचार

7. फलदार, औषधि एवं पर्यावरण महत्व के पौधों की रोपणी एवं प्रदर्शनी

8. साधना केन्द्र

- देवस्थान
- यज्ञशाला
- कुटीर साधना कुटी (पिरामिड) ७

वांछित अधोसंरचना–

- साधना कक्ष + यज्ञ मण्डप+साधना कुटीर
- गोशाला –
- भूसा / चारा / दाना स्टोर
- युग निर्माण विद्यालय प्रशिक्षण कक्ष
- ग्रामोद्योग केन्द्र (निर्माणशाला)
- माता भगवती वनवासी वात्सल्य केन्द्र
- वनवासी आरोग्यधाम
- प्रदर्शनी एवं पुस्तकालय
- कार्यकर्ता आवास एवं कार्यालय
- छात्रावास
- अतिथि एवं प्रशिक्षक / प्रबंधक / समयदानी कक्ष

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

स्वालोकम

(स्वावलम्बी लोकसेवी मण्डल)

स्वावलम्बी लोकसेवी मण्डल—1964-65 में परमपूज्य गुरुदेव ने जब युग निर्माण विद्यालय गायत्री तपोभूमि मथुरा में आरंभ किया तब उनकी सोच यह थी कि समाज में से लोकसेवियों की ऐसी पीढ़ी निकले जो उद्योगजीवी बने न कि भिक्षाजीवी अथवा व्हाइट कॉलर जॉब वाली। युवापीढ़ी में से ऐसे चिन्तन वाले कई युवा मिलकर एक मण्डल बना सकते हैं जो मिल-जुलकर औसत भारतीय स्तर की निर्वाह व्यवस्था बनाकर शेष समय एवं राशि लोकसेवा में लगा सकें। इसे ''सर्व'' (SERVE) (सेल्फ रिलायण्ट वालण्ट्री एस्टेब्लिश मेण्ट) अथवा स्वालोकम (स्वावलम्बी लोकसेवी मण्डल) नाम दिया जा सकता है। ऐसे प्रयोग स्थान-स्थान पर आरंभ भी हो गए हैं। पर दृष्टि संस्कार प्रधान हो, पारदर्शिता प्रधान हो, उद्योग प्रधान न हो, यह सोचकर अब नए मानदण्ड निर्धारित किये जा रहे हैं।

•**नोट** - शांतिकुंज से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना कौशल बढ़ाएं । अपने जैसे समान मिशनरी विचारधारा वाले युवाओं को मिलाकर मंडल गठित करें ।

•क्षेत्र में उपलब्ध संसाधन एवं आवश्यकता अनुसार उद्योग/व्यापार का चुनाव करें । उत्पादों के निर्माण हेतु घर-घर कुटीर उद्योग शुरू कराएं । प्रमाणिक तंत्र तैयार करें । शुद्ध उत्पाद बनायें ।

•कच्चा माल स्वयं उपलब्ध कराएं तथा प्रसंस्करण (निर्माण) घर- घर से कराएं ।

•उत्पादों के विक्रय हेतु सहकारी स्टोर स्थापित करें तथा इनका संचालन स्वावलम्बी लोकसेवी मंडल के सदस्य मिलकर करें । विक्रय हेतु युवाओं को अंशकालिक रोजगार (सेल्समेन) दें ।

•आय-व्यय का हिसाब नियमानुसार रखें ।

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

व्यसन मुक्ति अभियान

(व्यसन से बचाओ-सृजन में लगाओ)

संकल्प पत्र

नाम - श्री/श्रीमती.....जन्मतिथि -.....

पिता/पति का नाम - .....

पता -.....

जिला -.....प्रांत-.....पिन नं- .....

मोबाइल -.....ईमेल-.....

1. मैं गायत्री परिवार द्वारा दिए गए व्यसन मुक्ति के दिव्य सन्देश को सुनकर बहुत ही प्रभावित हूँ। व्यसन के भयंकर दुष्परिणाम को अब मैं भली भांति समझ रहा/रही हूँ।

2. आज मैं परमात्मा के सूक्ष्म संरक्षण में संकल्प लेता/लेती हूँ कि .....रूपी नशे को हमेशा के लिए त्याग दिया। भविष्य में कभी भी किसी भी प्रकार का नशा नहीं करूंगा/करूंगी। साथ ही अपने संपर्क में आने वाले ..... व्यक्तियों को अपने अनुभव के आधार पर दुर्व्यसन मुक्त करने का प्रयास करूंगा/करूंगी।

3. व्यसन में नष्ट होने वाले धन, शक्ति, समय एवं प्रतिभा को बचाकर अपने परिवार एवं समाज के निर्माण में लगाऊंगा/लगाऊंगी।

4. अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने एवं उसे अच्छे मार्ग पर चलाने हेतु नियमित उपासना (ईश्वर की), साधना (स्वयं की) व आराधना (समाज की) के तीन कार्य नियमित रूप से करूंगा/करूंगी।

ईश्वर मुझे मेरे उपरोक्त संकल्पों पर दृढ रहने की शक्ति प्रदान करे।

दिनांक ..... हस्ताक्षर संकल्पकर्ता

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

बाल संस्कार शाला

पंजीयन फॉर्म

बाल संस्कार शाला केंद्र- ग्राम/ नगर.....

संचालक का नाम. श्री/श्रीमती/कु.....
पुत्र/पुत्री/पति .....
शैक्षणिक योग्यता..... आयु.....वर्ष,
निवास पता.....
.....
जिला..... प्रांत-.....पिन नं.....
फोन/मोबाइल .....ईमेल .....
संस्कार शाला स्थल.....पर दिनांक..... को आरंभ की गई।
सहयोगी आचार्य का नाम व पता.....
.....फोन नंबर.....
संस्कार शाला में आने वाले बालक/बालिकाओं की संख्या..... है।
अन्य सहयोगियों व्यक्तियों के नाम-पते संलग्न हैं।

दिनांक ...../..... /.....

हस्ताक्षर संचालक-
आचार्य-

प्रति-वंदनीया दीदी शैलबाला पण्ड्या
युवा जाग्रति अभियान एवं सप्त आंदोलन कार्यालय
अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज हरिद्वार, पिन नं 249411
फोन नं.:- 01334-260602 (एक्स. 436), 9258360652

बाल संस्कार शाला प्रगति प्रतिवेदन

(इस फॉर्म की अलग से छायाप्रति करवा लें एवं संचालन आरंभ होने के बाद प्रत्येक 3 माह पर इसे भेजते रहें)

बाल संस्कार शाला पंजीयन क्रमांक- .....

प्रगति प्रतिवेदन का समय- माह.....से..... 20 ....तक

संचालक का नाम.....

सहायक का नाम.....

पता.....

.....

बाल संस्कारशालाओं की संख्या.....

बाल संस्कारशाला आरंभ होने की तिथि.....

बालकों की संख्या..... आयुवर्ग.....

बालकों की प्रतिक्रिया .....

.....

उपस्थिति संख्या बढ़ी/घटी/यथावत.....

कक्षा का क्रम/गतिविधियाँ.....

अभिभावकों की प्रतिक्रिया.....

.....

कोई समस्या आई हो तो लिखें-.....

.....

उसका समाधान क्या किया, उल्लेख करें

शांतिकुंज से क्या अपेक्षित है - .....

उल्लेखनीय बात / विशेष उपलब्धि यदि कोई हो, यहाँ लिखें या पत्र के साथ संलग्न करें

प्रति-वंदनीया दीदी शैलबाला पण्ड्या

युवा जाग्रति अभियान एवं सप्त आंदोलन कार्यालय

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज हरिद्वार, पिन नं 249411

फोन नं.:- 01334-260602 (एक्स. 436), 9258360652

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

बाल संस्कार शाला

अभिभावक पत्र

अपने बालकों को चरित्रवान, सुसंस्कृत नागरिक बनायें संस्कार शाला में प्रवेश दिलायें

स्थान.....प्रारम्भ दिनांक.....

समय.....

आत्मीय बहिनों/भाईयों,

आज प्रत्येक माता-पिता यह चाहते हैं कि उनके बच्चे न केवल स्कूल शिक्षा में ही अग्रणी हों अपितु अन्य कलाओं, जैसे खेलकूद, वक्तृत्व कला व अन्य सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों में भी प्रवीण हों व अपनी गौरवशाली परम्पराओं व संस्कृति का भी ज्ञान रखें। विद्यालय में शिक्षक एवं प्रधानाचार्य भी चाहते हैं कि विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे परिणाम लायें एवं हर भाँति उनकी संस्था का गौरव बढायें।

किंतु दुर्भाग्य की बात है कि आज पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति के अंधानुकरण के दौर में विदेशी टी. वी. चैनलों की भरमार, दुर्व्यसनों, अशुद्ध खान-पान आदि की मार से वातावरण इतना दूषित हो गया है कि बच्चों को न तो विद्यालय में और न ही घर में वांछित संस्कार, नैतिक शिक्षण और प्रतिभा परिश्कार का अवसर मिल पाता है।सभी ओर भटकाव का भय बना रहता है।

युग ऋषि पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के सूक्ष्म संरक्षण में गायत्री परिवार द्वारा व्यापक स्तर पर बाल संस्कार शाला केन्द्र चलाये जा रहे हैं जिनमें बच्चों को सुसंस्कृत बनाने हेतु विभिन्न उपायों से शिक्षण दिया जाता हैं। अभिभावकों व गुरुजनों का आदर व आज्ञापालन, प्राणायाम, योगासन, ध्यान, स्मरण शक्ति बढ़ाने के उपाय, बालनीति की कथायें, पर्व महिमा, देशभक्तों, संतों, महापुरुषों के दिव्य जीवन चरित्र, खेल प्रतियोगिताओं आदि के द्वारा बच्चों की सुप्त शारिरिक एवं मानसिक क्षमताओं एवं संवेदनाओं को

जागृत कर उन्हें सभ्य एवं सच्चरित्र नागरिक बनाने का प्रयास किया जाता है।

आपसे अनुरोध है कि अपने क्षेत्र में उपरोक्त स्थान पर संचालित की जा रही बाल संस्कार शाला केंन्द्र में अपने 6 से 13 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिलवाकर इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठायें एवं हमारी देश की भावी पीढ़ी का निर्माण सुनिश्चित करें।

हमारी आपसे अपेक्षायें-

1. बालक को समय पर संस्कार केन्द्र भेजना
2. बालक को सिखाये गये शिक्षण को घर में अभ्यास हेतु प्रेरित करना
3. बालक के लिये घर में आवश्यक वातावरण निर्माण करना

धन्यवाद।

आयोजक, गायत्री परिवार,.....

----------×----------

अभिभावक सहमति पत्र

मैं गायत्री परिवार द्वारा संचालित बाल संस्कार शाला केन्द्र मेंअ पनेप ुत्र/पुत्री.....कोि जसकीज न्म तिथि.....आयु.....वर्ष एवं पता.....
.....है को प्रवेश दिलाने को तत्पर हूँ। मैं उपरोक्त केन्द्र के अनुशासनों का स्वयं पालन करूँगा/करूँगी एवं मेरे बच्चे को निष्ठापूर्वक सहयोग करूँगा/ करूँगी।

अभिभावक का नाम.....

पूरा पता.....
.....

संपर्क दूरभाष क्रमांक.....

दिनांक हस्ताक्षर

प्रवासी युवा

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ॥

हम सबका उच्च हित चाहने वाले युवा देश को जाग्रत बनाए रखेंगे ।

मनुष्यता कठिन दौर से गुजर रही है। वैयक्तिक , पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्थाएं बार-बार असफल हो रही है। प्रकृति क्षुब्ध हो गयी है , धरती के बढ़ते तापमान के परिणामस्वरूप जीव जंतु वनस्पति प्रतिक्षण लुप्त हो रहे है।

मनुष्य के अस्वच्छ मन ने ऐसी अनेक मुसीबतें पैदा कर दी है जिनका समाधान अत्यन्त दुष्कर हो गया है । वो स्वयं अशांत - विक्षुब्ध है, परिवार खण्ड-खण्ड है , समाज कुरीति-पाखण्ड की पकड़ में है , देश अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है । भ्रष्टाचार, अशिक्षा , गरीबी , आतंक , गन्दगी, चरित्रहीनता , अश्लीलता , भोगवाद, धार्मिक पाखण्ड जैसी चुनौतियाँ देश को जर्जर बना रही है ।

ऐसे भीषण समय में आशा की एक ही किरण है - युवा ।

प्राचीन काल में भी जब कभी ऐसी परिस्थिति बनी, भारत में कोई महामानव जन्म लेता है जो अपने जीवन को धारा के विपरीत खड़ा कर देता है। जनसामान्य जैसे दीन-हीन जीवन नहीं जीता, वो प्रकाश स्तम्भ सा चमकता है, स्वयं प्रकाशित होता है और अनेकों भटके हुए लोगो का पथ प्रदर्शक बनता है। भारतीय इतिहास ऐसे देवमानवों से भरा पड़ा है, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, शंकराचार्य, माधवाचार्य, महाप्रभु चौतन्य, रामानुजाचार्य, कबीर, मीरा, शिवाजी, समर्थ गुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, श्री अरविन्द, गांधी, श्रीराम मत्त आदि ने अपने को महान बनाया और अनेक देवमानवों का उत्पादन किया।

वर्तमान समय में फिर वैसा ही अवसर आया है , जब महाकाल ने जाग्रत और जीवंत आत्माओं को पुकारा है । परिव्राजकों , ब्राह्मणों, साधुओं की पावन परंपरा के पुनर्जीवन की आवश्यकता है । इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु शांतिकुंज ने युवा जाग्रति अभियान के अंतर्गत ऐसे युवाओं की खोज , प्रशिक्षण एवं नियोजन का कार्य प्रारम्भ किया है जो प्रवासी युवा बनकर महामानवों की पंक्ति में अपना नाम जोड़ ले ।

प्रवासी युवाः-

- **प्रवासी युवा** - भावनाशील , समयदानी , प्रतिभाशाली , साधक
- **दो प्रकार** - वरिष्ठ (जीवनदानी) , कनिष्ठ (समयदानी)
- **कार्यक्षेत्र** - सम्पूर्ण देश
- **नियोजन** - आवश्यकतानुसार क्षेत्र में
- **आजीविका** - आवश्यकता होने पर पूर्ण समयदानियों एवं एक वर्ष के समयदानियों का ब्राह्मणोचित निर्वाह शांतिकुंज की ओर से अथवा क्षेत्रीय संगठन/संस्थान के द्वारा प्रदान किया जायेगा ।
- **प्रशिक्षण** - शांतिकुंज द्वारा संचालित युग शिल्पी सत्र (एक मासीय सत्र) करना अनिवार्य होगा ।
- **कार्य पद्धति** - प्रवासी युवा अपनी नियुक्ति के क्षेत्र में निरन्तर प्रवास करेगा जिसकी योजना निम्नलिखितनुसार होगी -

  ⊙ **15 दिवसीय कार्यक्रम -**

  - ✧ अपने नियुक्ति स्थल केंद्र में प्रथम 2 दिवस में आगामी प्रवास क्षेत्र के संपर्क सूत्र प्राप्त करना ।
  - ✧ क्षेत्र की सम्पूर्ण जानकारी लेना ।
  - ✧ प्रौढ़ मित्र/संगठन के साथ बैठकर 10 दिवसीय प्रवास के कार्यक्रम निश्चित करना ।
  - ✧ प्रचार सामग्री आदि तैयार करना ।
  - ✧ उसके पश्चात तीसरे दिन क्षेत्र में प्रवास पर प्रस्थान तथा लगातार निर्धारण अनुसार प्रवास के विविध कार्य संपन्न करना ।

- ✧ 10 दिन पश्चात वापसी तथा आगामी 3 दिन में किये गए कार्य का रिकॉर्ड तैयार करना एवं केंद्र को रिपोर्ट भेजना।

⊙ **30 दिवसीय कार्यक्रम -**

- ✧ अपने नियुक्ति स्थल केंद्र में प्रथम 5 दिवस में आगामी प्रवास क्षेत्र के संपर्क सूत्र प्राप्त करना।
- ✧ क्षेत्र की सम्पूर्ण जानकारी लेना।
- ✧ प्रौढ़ मित्र /संगठन के साथ बैठकर 20 दिवसीय प्रवास के कार्यक्रम निश्चित करना।
- ✧ प्रचार सामग्री आदि तैयार करना।
- ✧ उसके पश्चात छठवे दिन क्षेत्र में प्रवास पर प्रस्थान तथा लगातार निर्धारण अनुसार प्रवास के विविध कार्य संपन्न करना।
- ✧ 20 दिन पश्चात वापसी तथा आगामी 5 दिन में किये गए कार्य का रिकॉर्ड तैयार करना एवं केंद्र को रिपोर्ट भेजना।
- ✧ अगले माह नए जिले की परिव्रज्या पर जाना।

- **टोली** - प्रवास पर दो प्रवासियों की टोली होगी तथा एक स्थानीय युवा साथी साथ रहेगा।
- **नियंत्रण एवं संचालन -**
  - ⌑ वरिष्ठ प्रवासियों की मॉनिटरिंग केंद्रीय कार्यालय-युवा जाग्रति अभियान , शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा की जायेगी ।
  - ⌑ कनिष्ठ युवा प्रवासियों की मॉनिटरिंग क्षेत्रीय संगठन द्वारा की जाएगी ।
- **रिपोर्टिंग एवं रिकॉर्ड तैयार करना -** प्रवासी को अपने प्रवास कार्यक्रम में संपन्न समस्त गतिविधियों एवं संपर्क में आये व्यक्तियों का विस्तृत रिकॉर्ड तैयार करना होगा। माह के अंत में अपने अपनी प्रगति रिपोर्ट केंद्र को भेजना अनिवार्य होगा। जिसके आधार पर मानदेय का प्रावधान किया जा सकेगा।

प्रवासी युवा द्वारा किये जाने वाले कार्य -

- अपने वर्ष भर के प्रवास की योजना वर्ष के प्रारम्भ में तैयार करना।
- नियुक्ति के स्थान पर स्थानीय प्रबंधन/ युवा प्रकोष्ठ के कार्यक्रमों की जानकारी लेना।
- **क्षेत्र में -**
    - ✧ युवा चेतना शिविरों का आयोजन करना।
    - ✧ युवा/ संस्कृति मंडलों का गठन करना।
    - ✧ बाल संस्कार शाला,आदर्श ग्राम आदि योजनाओं का प्रशिक्षण एवं शुभारम्भ करना।
    - ✧ योग शिविरों का आयोजन
    - ✧ विद्यालयों/महाविद्यालयों में डिवाइन वर्कशॉप / युवा संवाद का आयोजन करना।
    - ✧ व्यसन मुक्ति हेतु संगोष्ठी/रैली का आयोजन करना।
    - ✧ युवा प्रकोष्ठ कार्यालयों की स्थापना करना।
    - ✧ व्यक्तित्व निर्माण / व्यक्तित्व परिष्कार के सत्रों का आयोजन करना।
    - ✧ साप्ताहिक युवा व्यक्तित्व विकास कक्षाओं का आयोजन करना।
    - ✧ पारिवारिक युवा सम्मेलनों का आयोजन करना।
    - ✧ युवा क्रांति वर्ष के विविध कार्यक्रम पत्रक एवं उत्तिष्ठत जाग्रत पुस्तक के अनुसार आयोजन करना।
    - ✧ वार्षिक कार्ययोजना का क्रियान्वन करना।
    - ✧ पांच राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन का प्रबंध करना।
    - ✧ सामूहिक साधना/घर-घर यज्ञ आयोजनों का प्रशिक्षण प्रबंधन।
    - ✧ साहित्य विस्तार हेतु झोला पुस्तकालय एवं स्वाध्याय मंडलों की स्थापना एवं संचालन।
    - ✧ शांतिकुंज भ्रमण/प्रशिक्षण हेतु जिलेवार युवा दलों को प्रेरित करना एवं शांतिकुंज में शिविर हेतु व्यवस्था

बनाना।

- ✧ युवा मंडलों/बाल संस्कार शालाओं/आदर्श ग्रामों/स्मृति उपवनों का शांतिकुंज में पंजीयन कराना।
- ✧ अन्यः- समय-समय पर केंद्र के निर्देशानुसार कार्यक्रम संपन्न करना।

अहर्ताएं -

- नियमित उपासना - साधना
- साप्ताहिक व्रत-उपवास
- सदा ब्राह्मणोचित जीवन एवं वस्त्र विन्यास
- शांतिकुंज द्वारा कार्यकर्ताओं हेतु निर्धारित अनुशासन - "लोकसेवियों के दिशाबोध" पुस्तक अनुसार आचरण
- स्वस्थ शरीर - स्वच्छ मन हेतु योग एवं स्वाध्याय का नियमित क्रम संचालित करना

मुझे कुछ हीरे चाहिए

फूल मालाएं हमने सारी जिंदगी पहनी है। अब हमारा जेवर पहनने का मन है। हीरक जयंती पर हमारा हीरों का हार पहनने का मन है। हार पहनकर जब हम बाज़ार में निकले तो लोग कहे बड़ा मालदार आदमी है, शानदार आदमी है। दस हज़ार हीरों का हार। मेरी अब केवल यही एक इच्छा शेष है।

ऐसे हीरे जो मेरे कार्य को फैला सके / मेरे हाथ पाँव बन सके। चलते फिरते हाड - माँस के शक्तिपीठ बन सकें। वे जो अपना समय, प्रतिभा ओर साधन का एक अंश नियमित रूप से लोक कल्याण के लिए लगाने के लिए संकल्प के साथ आगे आ सकें। में उन्हें अपने हृदय से लगाकर रखूँगा। सदैव उनकी हिफाज़त करूँगा। मुझे ऐसे हीरों का हार चाहिए।

क्या आप ऐसा हीरा बनना चाहेंगे ?

पूज्य गुरुदेव (बसंत पंचमी, 1985, हीरक जयंती पर्व)

युग प्रवक्ता

भूमिकाः- विकास का चक्र तेजी से चल रहा है। विज्ञान के चमत्कारों और नित नई खोजों ने मानव जाति को सुख-सुविधाओं के ढेर पर बिठा दिया है। उपभोगवादी जीवन शैली के परिणामस्वरूप जन मानस स्वार्थ लिप्सा के दलदल में फँसा जा रहा है। त्याग, परोपकार तो उसकी पहुँच से दूर ही हो गए हैं। आदर्श और सिद्धांतों का ढोल पीटते तो बहुत दिखाई देते हैं, परंतु आचरण में उतारने को कम ही लोग तैयार रहते हैं। विज्ञान ने अपना पौरूष दिश दिया है। पर अध्यात्म उसी तुलना में पिछड़ता नजर आ रहा है। परिणाम सामने है। मानवीय मूल्यों और आदर्शों की उपेक्षा से समाज अनास्था के गहरे अंधेरे में घुसा जा रहा है। ऐसे समय में स्मरण हो आता है, प्राचीन साधु और ब्राह्मणों का जो वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता का उद्घोष करते हुए राष्ट्र को जीवंत और जाग्रत बनाए रहते थे।

परम पूज्य गुरूदेव ने वर्तमान समय के प्रबुद्धों से धर्म तंत्र को संभालने की अपील की है। अस्तु, राष्ट्र के भावनाशील और समयदानी प्रतिभाशालियों को संगठित कर तथा प्रशिक्षित कर उनके माध्यम से तथ्य, तर्क और प्रमाणों के आधार पर भौतिक जगत में अध्यात्मवादी प्रतिपादन हेतु युग निर्माण मिशन से जुड़े भावनाशील वैज्ञानिकों, प्रबुद्धों, प्रखर वक्ताओं को तलाशा और तराशा जा रहा है।

लक्ष्य - विषयवस्तु विशेषज्ञों के माध्यम से महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, कॉर्पोरेट जगत, वैज्ञानिक वर्ग, तकनीकि वर्ग, प्रशासक वर्ग, राजनीतिक वर्ग आदि प्रबुद्ध वर्ग के व्यक्तियों के बीच युग संदेश पहुँचाना।

कार्यक्षेत्र - प्रांतीय स्तर पर कार्य करेंगे तथा आवश्यकतानुसार, केंद्र के निर्देश पर अन्य क्षेत्रों में भी कार्य कर सकेंगे।

अहर्ताएं/अपेक्षाएँ- नियमित उपासना साधना, नियमित स्वाध्याय, विषयवस्तु का उत्तम ज्ञाता, कुशल व संयमित वक्ता, मिशन की विचारधारा व गतिविधियों का अच्छा जानकार, समर्पित कार्यकर्ता, यथोचित शैक्षणिक योग्यता, प्रबुद्ध वर्ग में विचार संप्रेषण में सक्षम, शिक्षण की विविध प्रणालियों यथा पीपीटी प्रोजेक्टर आदि का

चालनज्ञान, आवश्यकतानुसार समयदान कर सकने की स्थिति, भारतीय वेशभूषा को प्राथमिकता, अपने क्षेत्र में प्रभावी जनसंपर्क, वाणी एवं लेखनी में प्रवीणता।

कार्यः-

- ✧ अपने क्षेत्र में सहयोगियों की टीम तैयार करना।
- ✧ अपने-अपने क्षेत्र में विविध विषयों पर कार्यशालाएं/संगोष्ठियों, सभाओं का आयोजन करना।
- ✧ युवा वर्ग में युग निर्माण का संदेश देने हेतु महाविद्यालयों/ विश्वविद्यालयों/ कॉर्पोरेट जगत से संपर्क कार्यक्रम।
- ✧ विविध विषयों पर अद्यतन जानकारी युक्त विषय वस्तु पर पीपीटी/लेक्चर बनाना।
- ✧ केंद्र के सतत संपर्क में रहना एवं मिशन की मूल विचारधारा से जुड़े रहना।
- ✧ सनातन सूत्रों को नई शैली में प्रस्तुत करना, लोक जागरण के लिए जन सम्मेलन करना।
- ✧ पर्व उत्सवों को प्रगतिशील स्वरूप प्रदान कर धर्म प्रचार का साधना बनाना।
- ✧ बाल-संस्कारशालाओं का संचालना करना/कराना।
- ✧ नवनिर्माण के आलोक वितरण हेतु लेखन कला को विकसित करना।
- ✧ क्षेत्र के स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रज्ञा आंदोलन विषयक विचारों को स्थान दिलाने का प्रयास करना।
- ✧ अपने जैसी योग्यता वाले प्रशिक्षक तैयार करना।
- ✧ एसएमएस/मेल द्वारा सद्वाक्यों श्रेष्ठ विचारों के प्रसारण की योजना बनाना।
- ✧ लोकल टी.वी. चैनलों में युग प्रवाह आदि के प्रसारण की व्यवस्था बनाना।

कार्य पद्धतिः- युग प्रवक्ता केंद्रीय जोनल कार्यालय के सहयोग से क्षेत्र में कार्यक्रम निश्चित करेंगे अथवा केंद्र संगठन के माध्यम से कार्यक्रम तय करेगा तथा युग प्रवक्ता को केंद्रीय प्रतिनिधि के रूप में कार्यक्रम संचालन हेतु प्रतिनियुक्त करेगा।

अखिल विश्व गायत्री परिवार,शांतिकुंज ,हरिद्वार

प्रवासी युवा/युग प्रवक्ता

संकल्प पत्र

- नाम :- .....
- पूरा पता :- .....
  .....
- जिला -.....प्रांत-.....पिन नं- .....
- उम्र/जन्मतिथि :- .....शिक्षा :- .....
- मोबाइल नं.:- .....व्हाट्स एप्प नं.:- .....
- ईमेल :- .....
- मिशनरी योग्यता :- .....
  .....
  .....
- विशेष योग्यता :- .....
  .....
  .....
- समयदान अवधि :-..... से .....तक
- समयदान क्षेत्र :-.....
- पूर्व में दिए गए समयदान का विवरण :-.....
  .....
  .....
- शांतिकुंज में संचालित सत्रों में सहभागिता का विवरण :- .....
  .....

दिनांक..... हस्ताक्षर

दिव्यता जागरण कार्यशाला
Divine Workshop

मनुष्य ने हर क्षेत्र में प्रगति की है। फिर भी सुख, सन्तोष, शान्ति, प्रसन्नता का जीवन में अभाव है। इस सबका कारण है, आत्म विस्मृति। इन दिनों मानव जाति आत्म विस्मृति के संकट से गुजर रही है। प्रत्यक्षवाद ने आदर्शों पर से आस्थाएँ बुरी तरह डगमगा दी हैं। जैसे भी बने, स्वार्थसाधन ही प्रमुख दृष्टिकोण रह गया है। हर ओर भौतिकवाद का ही बोलबाला है। मनुष्य अपने आपको मन समेत इन्द्रियों का ही समुच्चय, शरीर मानता है। इसलिए उसकी जो कुछ इच्छा, अभिलाषा, आकांक्षा, चेष्टा होती है, वह शरीर की परिधि तक ही सीमित होकर रह जाती है। सभी क्रियाकलाप उसी में सीमाबद्ध होकर रह गये। फिर भले ही इसके लिए अपनी आत्मा या मनुष्यता की गरिमा को ही दाँव पर क्यों न लगाना पड़े। फलतः मनुष्य मनुष्यता खो देने के मार्ग पर चल पड़ा है।

आत्मा भी कोई चीज है, इसके विषय में कुछ सोचा, किया नहीं जा रहा, परिणामतः व्यक्ति, परिवार, समाज के अस्तित्व पर ही संकट आ खड़ा है। सब कुछ रहते हुए उसे आन्तरिक प्रसन्नता, आत्मिक संतुष्टि का अनुभव नहीं होता। मन में, हृदय में एक प्रकार की रिक्तता अनुभव होती रहती है। मानसिक अशान्ति बनी रहती है। आन्तरिक तड़पन 'कुछ तो अभाव है' का एहसास निरंतर सताता रहता है। सभ्यता शरीर को और सुसंस्कारिता मन को प्रभावित करती तथा परिष्कृत बनाती है। यह पक्ष जब तक उपेक्षित रहेगा,त बत कअ ान्तरिकउ ल्लासक ाअ नुभवन हीं कयाज ा सकता।

भौतिक उपलब्धियों की प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में आज का युवा जीवन के वास्तविक आनन्द, उद्देश्य, अपनी मौलिकता और अपनी वास्तविक पहचान से दूर होता जा रहा है। परिणामतः वह जिस रिक्तता का अनुभव करता है, उसे पूर्ण करने की चाह में

दिखावेबाजी, क्लब, सिनेमा, नशों आदि की ओर प्रवृत्त हो रहा है, मार्गभ्रमित हो रहा है। परंतु वहाँ भी उसे आन्तरिक संतुष्टि नहीं मिलती। उसकी तलाश पूरी नहीं होती। कुछ समय बाद जब उसे होश आता है, तो वह स्वयं को लुटा हुआ महसूस करता है और अवसादग्रस्त हो जाता है, टूट जाता है।

एकांगी विकास का ही यह परिणाम है। वस्तुतः भौतिक और आध्यात्मिक, शरीर और आत्मा दोनों की ही आवश्यकताओं का ध्यान रखने से जीवन में पूर्णता आती है। आत्म संतुष्टि का अनुभव होता है।

युवा जीवन की इस रिक्तता की पूर्ति कैसे हो, युवा जीवन के इस तनाव से कैसे बाहर निकलें, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए गायत्री परिवार द्वारा दिव्यता जागरण कार्यशालाओं (Divine Workshops) का आयोजन किया जाता है।

इसके अंतर्गत मानव जीवन की गरिमा, Stress Management, Time Management, Life Management, Personality Refinement, Scientific Spirituality, Corporate Excellence, Art of Living, Holistic Health Management आदि विषयों पर स्कूल, कॉलेज, कॉर्पोरेट सेक्टर में कार्यशालाएँ सम्पन्न की जाती हैं।

यह कार्यशाला समय, परिस्थिति, आवश्यकतानुसार दो घण्टे अथवा चार घण्टे तक की हो सकती है।

कार्यशाला का स्वरुप -

- **Divine Music -** प्रज्ञा धुन आधुनिक वाद्य यन्त्र पर बजाना
- **Divine Song -** प्रज्ञा गीतों का नए अंदाज में गायन
- **Divine Play -** सामयिक समस्याओं पर आधारित लघु

विद्यालयों / महाविद्यालयों/ कारपोरेटस् के लिये डिवाईन वर्कशॉप हेतु दिये जाने वाले प्रस्ताव पत्र का प्रारूप

Dear Sir,

Greetings from Shantikunj

Hope this shall find you at the best of your health and spirit. Allow us to take this opportunity to share with your good self that although the whole world is looking forward to Young India, but we must understand that there is an immense need to channelize their innate potential and offer them appropriate guidance so that they can harness their strengths and create a better future.

Youth today face tremendous challenges related to physical mental and emotional level and have been falling victim to addictions like gaming, i-dosing, smoking, alcohol, drugs pornography and many more. Those who are not falling prey to these, and seeking solutions are also in the middle of a dilemma. 65% of them do understand their problems but don't know where they can ask for solution.

Keeping all this in mind, All World Gayatri Pariwar, Shantikunj and Dev Sanskriti Vishwavidyalaya (University) have designed special workshops and seminars for the college and school going youngsters. These sessions focus on grooming their personality, making them gain control over their life, refining their self, awakening themselves, and learn a new art of living. The

नाटिकाओं का मंचन

- **Divine Show -** प्रेरक / रचनात्मक कार्यक्रमों का वीडियो दिखाना
- **Divine Message -** प्रेरक उद्बोधन / वीडियो सन्देश
- **Divine Oath -** अंग्रेजी में सत्संकल्प एवं व्यसन मुक्ति संकल्प कराना
- **Divine Connect-** संगठन मंडल हेतु प्रेरणा एवं संपर्क बताना

युवा उत्कर्ष, प्रारूप

दिनांक- .....

कार्यक्रम विवरण

	समय	कार्यक्रम
प्रातः	10.00-10.05	दीप प्रज्जवलन, देव पूजन
	10.05-10.15	मंगलाचरण, सामूहिक साधना
	10.15-11.30	व्यक्तित्व परिष्कार के सूत्र
	11.30-12.30	व्यसन से बचाओ-सृजन में लगाओ
दोप.	12.30-01.00	नुक्कड. नाटक
	01.00-02.00	राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी/हमारे रचनात्मक आंदोलन
	02.00-02.15	सत्संकल्प पाठ, शांतिपाठ

----- 000 -----

sessions are conducted with the utmost interest of the welfare of the beneficiaries. Also, sessions for teachers, parents and guardians who are directly linked with the youth at their respective levels are conducted based on the requirement.

Enclosed is the brief report of some of the efforts for your kind perusal. We look forward to offer the same assistance for the youngsters of your esteemed institution along with teachers, parents and guardians.

Best wishes for your social and spiritual well being!

Team Shantikunj

Contact details: Ashish Singh: 9258360785,
Manish Chouriya: 9258360962,
Sadanand Ambekar: 09258360928,
Email: youthcell@awgp.org

----------X----------

Brief Report of Our Work

Looking into the present day's scenario of degradation of life style and modern day challenges to cope with stress, work life balance issues, and personality disorders; it is of prime importance that we analyze our situation and seek possible solutions. The best of the scientific developments which were meant to make human life simpler and smoother are falling out to the expectations and are infact causing more distress due to misusage.

We are always racing to master the situation or the people around us but are badly failing in mastering

ourselves. In this blind chase we are violating the fundamental laws that govern us and therefore we are falling victim to unwanted situations. Heart disease, diabetes, cancer, tuberculosis, psychological disorders, suicide rates, crime rates; everything is shooting high. Researches and surveys reveal that we are living in a great depression era. Failure is one word, which gives us nightmares. We are so mesmerized in our run for money, success and growth that we are forgetting the very aim for which we wanted them. We have stopped picking those gentle signals from the teacher called life and have ignored it to such an extent that it's taking a toll on our physical, mental and emotional health deteriorating it to severe levels. Self-awakening through self-analysis, self-examination and self-development is the only solution. But it's easier said than done. We need to learn those formulae which help us in the process of awakening the self.

Change is happening every moment. It is the only permanent thing in the world and we must learn it in order to solve and simplify. Changing self is the key to change the society. We all should become catalysts in this change process, which the era is going through. After reaching the peak of material development, we as species are going to evolve at the conscious level, and this evolution is the only solution to all the present day's problems

Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, under the aegis of Shantikunj is dedicated to help people identify and develop

their innate potential of the youth and help them realize their hidden divinity.

"We strongly feel that we are not human beings on a spiritual journey, we are spiritual beings on a human journey."

Through the thoroughly designed modules and sessions based on holistic research based understanding of the common problems which the society is facing today, we offer solutions based on spiritual teachings and inturn facilitate in making people's lives better.

This is done by delivering Seminars to various academic and corporate institutions pertaining to "Self Awakening" which comprises of several useful components as listed below with mild touch to spirituality.

- Personality Refinement /Art of Being
- Stress Management
- Goal Setting
- Capacity Building
- Performance Enhancement, etc

There has been several success stories emerged through effective outcome of Seminars conducted successfully in following institutions Core business school, Indore; IIT BHU; MANIT Bhopal; AIIMS Bhopal; SSB Training centre Bhopal; JIMS, Delhi; MATS University. Among Corporate - Wipro Pune , Air Force India, Birla Tyres, Hero Motocops, DRDO, HAL, IBM Bangalore and many more have been benefitted over the last few years.

मंडलों के सदस्य हेतु

व्यक्तिगत विवरण पत्रक

आई.डी.नं.- (शान्तिकुञ्ज द्वारा आबंटित होगा) .....

सरनेम- ..... नाम-.....

लिंग- स्त्री/पुरुष..... अविवाहित.....विवाहित.....

पिता/पति का नाम-.....

जन्म तिथि- .....विवाह तिथि- .....

दीक्षा तिथि- .....

पूरा पता- .....

जिला- .....प्रान्त- .....पिनकोड-.....

दूरभाष- .....फैक्स- .....

मोबाइल- .....व्हाट्स एप्प नं.:- .....

ईमेल- .....भाषा- .....

शिक्षा- .....व्यवसाय- .....

अंशदान संकल्प राशि- .....मासिक/वार्षिक

समयदान अवधि (.....से.....तक)

वार्षिक/त्रैमासिक/अन्य पत्रिका विवरण-

क्र.	नाम (पत्रिका)	भाषा	संख्या
1.....			
2.....			

परिवार विवरण-

क्र.	नाम	जन्मतिथि	शिक्षा	सम्बन्ध
1.....				
2.....				
3.....				

दिनांक- हस्ताक्षर

प्रज्ञा मण्डल/ महिला मण्डल/ युवा मण्डल/ संस्कृति मण्डल

पंजीयन - पत्रक

पंजीयन क्र. .....(शान्तिकुञ्ज उपयोग हेतु)

1.मण्डल का नाम .....

मुहल्ला/कॉलोनी का नाम- .....

ग्राम- ..... पोस्ट-.....

.ब्लॉक/तहसील.....जिला-.....

प्रान्त-.....पिन कोड- .....

2.संचालक/संचालिका का नाम व पूरा पता.....

.....

.....

3. मण्डल की आय के स्रोत (ज्ञानघट, धर्मघट, अंशदान, यज्ञ, संस्कार व अन्य)-.....

.....

4. मण्डल के पास उपलब्ध साधन- ज्ञानरथ, संगीत उपकरण, ध्वनि विस्तारक यंत्र सेट, यज्ञ-दीपयज्ञ हेतु साधन सामग्री- .....

.....

.....

5. मण्डल द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों की जानकारी लिखें-

.....

.....

.....

6. मण्डल द्वारा मँगायी जा रही पत्रिकाओं की कुल संख्या का विवरण-

अखण्ड ज्योति सं. ..... युग निर्माण योजना सं. .....

प्रज्ञा अभियान पाक्षिक..... युग साधना/युगशक्ति.....

युग प्रवाह सी.डी. पाक्षिक सं. ..... अन्य.....

8. मण्डल के कितने सदस्यों ने शान्तिकुञ्ज में कौन-कौन से सत्र किये हैं-

एक मासीय युग शिल्पी .....नौ दिवसीय सत्र .....

एक मासीय परिव्राजक सत्र .....रचनात्मक सत्र .....

अन्य सत्र.....

9. विशेष जानकारियाँ (भविष्य की योजनाएँ)

.....

.....

.....

दिनांक-.....

संचालक/संचालिका हस्ताक्षर

पूरा नाम .....

नोटः 1. इस प्रपत्र को भरकर शान्तिकुञ्ज भेजें।

2. आई. डी. नम्बर (व्यक्तिगत पहचान क्रमांक) शान्तिकुञ्ज द्वारा दिया जाता है।

3. मण्डल के सदस्य एवं संचालक अपना व्यक्तिगत विवरण पत्रक भरकर इसी के साथ संलग्न करें।

4. मण्डल के (संचालक अथवा सदस्य) भाई/बहिन कई मण्डल बना सकते हैं, परन्तु दूसरे मण्डल में अपना नाम नहीं लिखा सकते।

5. प्रज्ञा मण्डल भाईयों के लिए, महिला मण्डल बहिनों के लिए एवं युवा मण्डल युवा भाई-बहिनों के लिए है।

6. Diya Group भी इसी पत्रक में अपना पंजीयन कराये।

युवा क्रांति वर्ष 2016, शान्तिकुन्ज हरिद्वार

.....स्तरीय संकल्प पत्र, ब्लॉक/जिला -.....

क्र.	रचनात्मक कार्य	संकल्प
1	कितने नए युवाओं को मिशन से जोडेंगे ?	
2	कितने युवा मंडल का गठन करेंगे?	
3	कितने प्रवासी युवा समयदानी आएँगे?	
4	कितने युग प्रवक्ता बनेंगे ?	
5	कितने एक दिवसीय युवा उत्कर्ष / युवा चेतना शिविर कार्यक्रम करेंगे ?	
6	कितने विद्यालयों/महाविद्यालयों/संस्थानों में डिवाईन वर्कशॉप कराएँगे?	
7	पारिवारिक युवा सम्मलेन कितने कराएँगे ?	
8	कितनी बाल संस्कार शालाएँ चलाएंगे ?	
9	कितने नारी जागरण के कार्यक्रम चलाएंगे ?	
10	कितने श्रीराम स्मृति उपवन/वन बनाएँगे? *****	
11	कितने ग्रामों को आदर्श ग्राम बनाएंगे ? *****	
12	कितने स्कूल-कॉलेजों में व्यसन मुक्ति अभियान के कार्यक्रम आयोजित करेंगे?	
13	21 जून पर कितने स्थानों पर योग दिवस के कार्यक्रम करेंगे?	
14	पूरे वर्ष भर में कितना वृक्षारोपण कराएँगे?	
15	गुरु पूर्णिमा से श्रावण पर्व तक कितने वृक्ष लगायेंगे ?	
16	कितनी जगह पर जलस्रोतों की स्वच्छता कराएँगे?	
17	20 सितंबर 2016 कितने स्थानों पर स्वच्छता कार्यक्रम करेंगे?	

नामः-..... हस्ताक्षर संयोजक

पताः-.....

मोबा.:- .....

आंदोलन समूह पत्रक

(कृपया स्पष्ट अक्षरों में भरें)

नाम : .....

जिला : .....

प्रांत : .....

मोबा./ : .....

ई-मेल : .....

आन्दोलन समूह ✓ अपनी रुचि पर निशान लगायें

☐ युवा जोड़ो अभियान	☐ साधना
☐ वृक्ष गंगा	☐ स्वास्थ्य
☐ बाल संस्कारशाला	☐ साहित्य विस्तार
☐ आदर्श ग्राम	☐ आपदा प्रबंधन
☐ जलशुद्धि/स्वच्छता	☐ स्वावलम्बन
☐ व्यसनमुक्ति	☐ नारी जागरण

अपनी योग्यता एवं क्षेत्र में कार्य अनुभव कृपया अवश्य लिखें